वषय : हिन्दी

अध्याय : सूरज का सातवाँ घोड़ा

अध्याय लेखक : रामप्रकाश द् ववेदी

कॉलेज / वभाग : भीमराव अम्बेडकर कॉलेज (हिंदी वभाग), दिल्ली वश्व वद्यालय

वषय-प्रवेश

1.1.1 धर्मवीर भारती का व्यक्तिव और कृतित्व

1.1.2 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का कथानक

1.1.3 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की चरित्र सृष्टि

1.1.4 इसकी रचना-प्र क्रया तथा परिवेश

1.1.5 शल्प, भाषा तथा सामाजिक उद्देश्य

ववेचन

निष्कर्ष

अभ्यास के लए प्रश्न

संदर्भ सूची

वषय-प्रवेश

आधुनिकता के उदय **(1800 ई0)** के साथ हिंदी के व भन्न गद्य-रूपों का वकास भी बहुत तेजी से प्रारंभ हुआ। कहानी, वचारपरक लेख, पत्रकारिता के लए सूचनाप्रद रपट आदि हिंदी के प्रारं भक रूप थे। भारत के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन **(1857 ई0)** के बाद और भारतेंदु के साहित्य जगत में आगमन के साथ नाटक, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, निबंध और गद्य लेख अपना आकार ग्रहण करने लगे थे। देवरानी जेठानी की कहानी(पं0 गौरीदत्त शर्मा), भाग्यवती (श्रद्धाराम फल्लौरी) और परीक्षा गुरू (श्रीनिवास दास) हिंदी के आरं भक उपन्यास माने जाते हैं। चन्द्रकांता (देवकीनंदन खत्री) अपने ढंग का उपन्यास था, जिसने बड़ी संख्या में श्रोताओं को पाठक बनाया। मुंशी प्रेमचंद **(1880-1936)** को उपन्यास-सम्राट कहा जाता है। उपन्यास, उप अर्थात समीप और न्यास अर्थात थाती के जोड़ से बना है, जिसका अर्थ हुआ (मनुष्य के) निकट रखी हुई वस्तु अर्थात वह वस्तु या कृति, जिसको पढ़कर ऐसा लगे क यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गई है। उपन्यास के अनेक प्रकार मलते हैं, जिसमें ऐतिहा सक, घटना-प्रधान, चरित्र-प्रधान, जासूसी, तिलस्मी, अय्यारी, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आंच लक आदि प्रमुख हैं। उपन्यास अपने कलेवर में बीस हजार शब्दों (व लयम कॉन्ग्रेव का 'इन काग्निटा') से लेकर चार हजार पृष्ठों (मार्शल प्रुस्त का 'ए ला रिचर्च दु तोप्येर्दु') तक हो सकता है। उपन्यास और कहानी के बीच कथा-साहित्य की एक नयी वधा भी मानी जाती है, जिसे लघु उपन्यास या उपन्या सका (शार्ट नॉवेल या नॉवलेट) कहा जाता है। इस वधा की अपनी रचना प्र क्रया, तात्विक वशेषताएँ और स्वरूप है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' अनेक आलोचकों की राय में एक लघु उपन्यास है। इसकी अपनी शल्पगत वशेषताएँ हैं और कई कहानियों को जोड़ता हुआ एक सूत्र मा णक मुल्ला का स्वयं का जीवन है। कथा आलोचकों ने उपन्यास के निम्न छह तत्व बताये हैं- कथा-वस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल, शैली और उद्देश्य। इनके अतिरिक्त द्वंद्व या संघर्ष (कॉनफ्लिक्ट) तथा कुतूहल या द्वैधाभाव (सस्पेंस) आदि भी उपन्यास लेखन के अंग माने जाते हैं।

गद्य की व भन्न वधाओं में उपन्यास का फलक अत्यंत व्यापक है। इसमें मध्यवर्ग अपनी समस्याओं के साथ उपस्थित होता है। पूंजीवादी व्यवस्था मोटे तौर पर समाज को तीन भागों में बांटती है, **(1)** बुर्जुआ **(2)** मध्य वर्ग और **(3)** निम्न वर्ग। मध्य वर्ग में नौकरी पेशा, वकील, शक्षक, क्लर्क, और अन्य साधारण लोग आते हैं। इसे मूलतः बौ द्धक वर्ग माना जाता है। सामाजिक क्रांति के वचारों का सर्जन और जनजागरण का दायित्व इसी वर्ग पर होता है। मध्य वर्ग में भी दो भाग कये जा सकते हैं- उच्च-मध्य वर्ग और निम्न-मध्य वर्ग। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' निम्न मध्य वर्ग के जीवन-मूल्यों, संकट-बोध और स्वप्नद र्शता की अ भव्यक्ति करता है।

आपने कहानियाँ पढ़ी होंगी। प्रेमचंद एक ऐसे कथाकार थे, जिन्होंने बड़ी सहज कहानियाँ लखी हैं। उनकी आपने कोई न कोई कहानी अवश्य पढ़ी होगी। कहानी की तुलना में उपन्यास थोड़ा व्यापक होता है। सरल ढंग से कहें तो उसमें कई कहानियाँ एक-दूसरे में गुंथी होती हैं । कहानी और उपन्यास दोनों को ही कथा-साहित्य के अंतर्गत रखा जाता है। दोनों के तत्व भी एक जैसे हैं, जैसा क ऊपर बताया भी गया है। धर्मवीर भारती ने भी अन्य वधाओं के साथ उपन्यास का भी लेखन कया है। धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' **(1952)** अपने अनूठे शल्प- वधान और मध्यवर्गीय जीवन के नजरिए, मूल्य और मान सकता को व्यक्त करने वाली एक श्रेष्ठ और रोचक कृति है। एक ओर जहाँ इस उपन्यास में नया कथा- वन्यास दिखता है, वहीं दूसरी ओर इसमें मध्यवर्ग की आकांक्षा, स्वप्न और संघर्ष की चेतना भी दिखाई देती है। यह वराट वर्ग कैसे लघुता की गरफ्त में फँसा हुआ है-उसका दु चत्तापन, उसका वद्रोही तेवर

और समझौतापरस्ती, सामाजिक-पारिवारिक मर्यादाओं की जकड़बंदी और इन्हें चटखाने की उसकी सफल- वफल को शशें इस उपन्यास की केंद्रीय समस्या के रूप में प्रकट होती हैं। अ धकांश कथा आलोचक इसके प्रयोगधर्मी शल्प की प्रशंसा करते हैं ले कन कथ्य का वश्लेषण कहीं छूटता रहा है। इसका कथ्य ऊपरी तौर पर प्रेम कहानियों की शक्ल में आता है परंतु मध्यमवर्गीय समाज के मोहभंग, निराशा और स्वप्न-नि र्मति को यह उपन्यास रोचक, व्यंग्यपूर्ण और अनूठी कस्सागोई तथा अ भनव प्रयोग के माध्यम से व्यक्त करता है।

'सूरज का सातवॉं घोड़ा' कथा और आत्मकथा की सहयात्रा के वधान में रचा गया है। उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की तुलना में मध्यवर्ग का जीवन अ धक व वधतापूर्ण, बहुआयामी, तनावमूलक, स्वप्नदर्शी और वरोधाभासी है। अपने इन्हीं गुणों के चलते मध्यवर्ग की जीवन वेदना महाकाव्यात्मक हो जाती है और उपन्यासकार सहज ही इन जीवन-मूल्यों की ओर आकृष्ट होते रहे हैं। मध्यवर्ग का आत्मानुभव लेखक के लए सहज ग्राह्य होता है, क्यों क वह स्वयं भी इसी वर्ग से आता है। मध्यवर्गीय जीवन उपन्यास की वषय वस्तु बनने के सर्वथा अनुकूल होता है।

1.1.1 धर्मवीर भारती का व्यक्तिव और कृत्तिव

This photograph was taken in 1955 in Allahabad during a visit of sister Veerbala and her children to brother Dharamvir Bharati's home. The picture shows Bharati Ji holding a dog. Bharati Ji's wife Kanta Bharati is sitting. Veerbala stands on right. Children Gopal, Yogesh and Rajiv (Author) are seated in front (L to R).

छ व 1.1: धर्मवीर भारती का परिवार

इलाहाबाद

छ व **1.1: धर्मवीर भारती का परिवार**

इलाहाबाद उ०प्र० का प्रसिद्ध शहर है। गंगा और यमुना नदियों का संगम भी यहीं होता है। इसलिये इसका पुराना नाम प्रयाग है। धार्मिक दृष्टि से भी इसकी पर्याप्त महत्ता है।

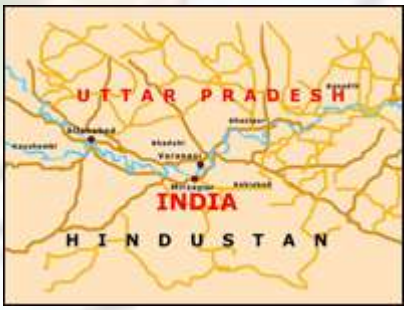

(उ.प्र.) में जन्में भारती ने साहित्य की व भन्न वधाओं में अपना अवदान कया है। एक उत्कृष्ट साहित्यकार के रूप में उनकी ख्याति तो है ही, ले कन वे एक प्रखर आलोचक, खबरनवीस, और चंतक भी माने जाते हैं। साहित्य की गहराई और पत्रकारिता का पैनापन उनकी अपनी सोच,परिवेश और जीवन-संघर्ष का परिणाम थे।

'अभ्युदय' (सं. पद्मकांत मालवीय) और 'संगम' (सं. इलाचंद्र जोशी) पत्रों में काम करते हूए, भारती 1960 में 'धर्मयुग' के संपादक बनकर मुंबई पहुँचे। इलाहाबाद के बाद मुंबई उनका स्थाई पड़ाव बना और 'धर्मयुग' से उनकी नयी पहचान कायम हूई। क व, कहानीकार, नाटककार, आलोचक, उपन्यासकार और निबंध लेखक के रूप में

उनका रचनात्मक व्यक्तिव हमारे सामने उपस्थित होता है। इनके काव्य-ग्रंथों में 'ठंडा लोहा' , 'सात गीत वर्ष, 'कनु प्रया' और 'सपना अभी भी, 'आद्यान्त' सभी च र्चत रहे हैं। 'मुर्दो का गाँव,' 'स्वर्ग और पृथ्वी, 'चाँद और टूटे हूँए लोग, 'बंद गली का आ खरी मकान' इनके कहानी-संग्रह हैं। इनके द्वारा र चत 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' हिंदी उपन्यास की समर्थ कृतियाँ हैं।

छ व **1.3:** उपन्यास : सूरज का सातवाँ घोड़ा पर श्याम बेनेगल फल्म भी बनाई

ग्यारह सपनों का देश', 'प्रारंभ और समापन' अन्य औपन्या सक रचनाएँ हैं। 'अंधायुग' प्रयोगधर्मी नाट्यकृति हैं, जिसमें नाटक और क वता की एक अनूठी सहयात्रा देखी जा सकती है। ' सद्ध साहित्य', 'प्रगतिवाद: एक समीक्षा' एवं 'मानव मूल्य और साहित्य' इनकी आलोचना कृतियाँ हैं। 'ठेले पर हिमालय', 'कहनी-अनकहनी' और 'पश्यंती' इनके उल्लेखनीय निबंध-संग्रह हैं। अनुवाद कार्य के साथ भारती ने एकांकी लेखन भी कया । 'नदी प्यासी थी' इनका एकांकी-संग्रह है। 'धर्मयुग' के संपादक के रूप में इनकी सृजनशीलता का नया आयाम हमारे समक्ष उपस्थित होता है। कॉमनवेल्थ रिलेशंस और जर्मनी सरकार के सहयोग से इन्होने इंग्लैंड, यूरोप और जर्मनी का भ्रमण कया। भारतीय दूतावास के आमंत्रण पर वे इंडोने शया और थाईलैंड भी गए। मुक्तिवाहिनी के सदस्य के रूप में आपको बंग्लादेश जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आपको भारत सरकार की ओर से पद्मश्री से भी नवाजा गया। **1972** में पद्मश्री से अलंकृत डॉ धर्मवीर भारती को अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए, जिसमें से प्रमुख हैं: **1984** हल्दी घाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन **1988** सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार संगीत नाटक अकादमी दिल्ली **1989,** भारत भारती पुरस्कार उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान **1990,** महाराष्ट्र गौरव, महाराष्ट्र सरकार **1994,** व्यास सम्मान, के के बिड़ला फाउंडेशन । उपरोक्त संस्मरण में भारती जी की मा णक मुल्ला जैसी छ व उभरती है। ऐसा लगता है क मा णक की जो कस्सागोई है वह भारती के व्यक्तित्व का अनिवार्य हिस्सा है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का कथानक भी इसी की गवाही देता प्रतीत होता है।

1.1.2 सूरज का सातवाँ घोड़ा' का कथानक

इसे लघु उपन्यास की संज्ञा दी गयी है। कथानक की बुनावट उपन्यास की वषय-वस्तु को नए आयाम प्रदान करती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' भी भारत-ईरान की प्राचीन शै लयों से प्रभा वत माना जाता है। ले कन, पुरानी कस्सागोई का यह तरीका -अ लफलैला, पंचतंत्र, दशकुमारचरित अथवा कथासरित्सागर - 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की ऊपरी त्वचा मात्र है, इसे कथानक का बुनियादी ढाँचा नहीं माना जा सकता। एक दूसरी शैली भी इसमें परिल क्षत की जा सकती है- वह है, वीरगाथाओं या अन्य महाकाव्यों जैसी शैली, जिसमें रचनाकार अपनी रचनाओं का रचयिता ही नहीं वरन् घटनाओं के बीच स्वयं भी उपस्थित है। वह भोक्ता और रचयिता दोनों है। इस प्रकार रचना तटस्थ होने, निजी अनुभूति को सार्वजनिक अनुभव में तब्दील करने का दायित्व बन जाती है। 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चंदवरदायी इसके महत्त्वपूर्ण् चरित्र भी हैं, ठीक उसी तरह जैसे वाल्मी क और तुलसी खुद को अपनी रचनाओं में उपस्थित कर देते हैं या क संजय महाभारत के घटनाचक्र में मौजूद है।

'सूरज का सातवाँ घोडा' के कस्से मा णक मुल्ला सुनाते हैं, ले कन वे इन कहानियों के वक्ता मात्र ही नहीं - वे इनके बीच बड़ी शद्दत से मौजूद हैं। वे इन कहानियों के भोक्ता भी हैं, ठीक वाल्मी क, संजय और चंद की तरह।

सूरज का सातवाँ घोड़ा

कहा जाता है क 'रासो' को चंदवरदायी ने पूरा न कर यह काम अपने बेटे जल्हण को सौंप दिया था। 'रासो' के अंतिम अंश उसी के द्वारा लखे गए, ठीक इसी प्रकार 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की कहानियाँ हैं तो सुनाई हुई मा णक मुल्ला की, परंतु उन्हें प्रस्तुत करता है उनका एक श्रोता 'मैं'। 'मैं' ही इसका मूल लेखक है ले कन वह रामचरित मानस के तुलसी की तरह, जो रामकथा के शव-पार्वती संवाद के प्रस्तोता मात्र बन जाते हैं- हमारे सामने आता है। वह मा णक द्वारा सुनाई कहानियों (जो अपनी श्रृंखलाबद्धता के चलते एक लघु उपन्यास का रुप धारण कर लेती हैं) के बारे में कहता है क "अंत में मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ क इस लघु उपन्यास की वषय-वस्तु में जो कुछ भलाई-बुराई हो उसका जिम्मा मुझ पर नहीं मा णक मुल्ला पर ही है। मैंने सर्फ अपने ढंग से वह कथा आपके सामने रख दी है"। यह लेखक-प्रस्तोता भी कथा में भले ही एक मामूली है सयत से-एक श्रोता के रूप में- मौजूद है। रचना और रचनाकार भारतीय परंपरा में सहज आवाजाही करते रहे हैं। यह उपन्यास भी अपने कथानक की बुनावट में कथा और कथाकार की तद्रूपता को संभव होने देता है। यथार्थ और कल्पना एक दूसरे के पूरक होने लगते हैं। यदि कहा जाय क मध्यवर्ग आधा यथार्थ और आधा स्वप्न में जीने वाला वर्ग है तो गलत न होगा। सृजन के लए भी कल्पना और हकीकत का संयोग एक अनिवार्य स्थिति है। इस लए मध्यवर्ग सर्वा धक सृजनशील, स्वप्नजीवी और बदलावमूलक होता है । 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' इसी मध्यवर्ग की दास्तान - उसकी अंत र्वरोधी स्थितियों के साथ - हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

इस रचना के कथानक को नए कलेवर में बुना गया है। शुरूआत उपोद्घात से हुई है। उपोद्घात यानी प्रस्तावना, भू मका। मुख्य कथा-अध्यायों के बीच में चार अनध्याय भी जोड़े गए हैं। इनके अतिरिक्त पूरी कथा सात दोपहरों में वभक्त है। सात दोपहर की कथा मा णक मुल्ला की है और उपोद्घात समेत चार अनध्याय उनके श्रोता 'मैं' की टिप्प णयाँ हैं। कुल मलाकर बारह भागों में वभाजित यह कथा मा णक मुल्ला के जीवन समेत उनके संपर्क में आए प्रमुख चरित्रों- जमुना, लली और सत्ती की जिंदगी पर प्रकाश डालती है। साथ ही, यह भी पता चलता है क इन पात्रों से जुड़े संदर्भों पर मा णक मुल्ला के श्रोताओं की प्रति क्रया कैसी थी। अपनी इन्हीं मली-जुली घटनाओं को लेकर यह उपन्यास आकार ग्रहण करता है।उपोद्घात में हमें मा णक मुल्ला के व्यक्तित्व, उनकी अ भरु चयों, कस्से गढ़ने की उनकी क्षमता और उनको सुनाने के अंदाज के बारे में जानकारी मलती है। यहीं हमें यह भी पता चलता है क, "अगर काफी फुरसत हो, पूरा घर अ धकार में हो, चार मत्र बैठे हों, तो निश्चित है क घूम- फरकर वार्ता राजनीति पर आ टिकेगी और जब राजनीति में दिलचस्पी खत्म होने लगेगी तो गोष्ठी की वार्ता 'प्रेम' पर आ टिकेगी।..... ले कन जहाँ तक साहित्यिक वार्ता का प्रश्न था, वे (मा णक मुल्ला) प्रेम को तरजीह दिया करते थे। इन कथनों से पता चलता है क उपन्यास लेखन के लए जरूरी उपकरण कौन से हैं। वे हैं- फुरसत का समय, ऐसे लोग जो स्वयं फुरसत में हों और इसे काटने के लए कस्सों का सहारा चाह रहे हों, ऐसी जगह जहाँ बाहरी व्यवधान न हो। राजनीति, प्रेम और साहित्य उपन्यास के सहज-स्वाभा वक वषय हो सकते हैं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की रचना इन्हीं उपकरणों के सहारे होती है। इस लये यह कृति वराट सामाजिक प्रश्नों को नज़रअंदाज कर वैयक्तिक संदर्भों से रची जाती है। इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास की श्रेणी में न रखकर लघु उपन्यास की श्रेणी में रखा गया है। आदर्श की स्थापना के बजाय यथार्थ का उदघाटन ही इसके केन्द्र में है। यह यथार्थ भी अपनी संवेदना और भावभू म में लघुता को ही, रोजमर्रा की आम घटनाओं को ही अ धक उभारता है। मा णक मुल्ला समेत सभी चरित्र एक औसत चरित्र हैं, वे अपनी दैनिक घटनाओं से ही इतने अ भभूत हैं क देश-दुनिया और समाज को अपनी निजी निगाहों से जाँचने-परखने का काम करते है। इसी लए बड़े सामाजिक दर्शन की एक रिड्यूस्ड समझ उनकी बनती है। गरिजा कुमार माथुर ने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के रचना- वधान को तीन कथा-वृत्तों में वभाजित कया है। 'प्रथम कथावृत्त का केंद्र मा णक मुल्ला है। जमुना, लली और तन्ना केंद्र के उपग्रह। दूसरे कथा-वृत्त का केंद्र भी मा णक मुल्ला है, सती, महेसर और चमन संह केंद्र के उपग्रह। तीसरा कथा-वृत्त 'मैं' का है, जिसके एक ओर मार्क्सवादी सद्धांतों का व्यंग्यपूर्ण चत्रण है और दूसरी ओर व्यक्तिवादी कला-पक्ष। यह वृत्त गौण है। गरिजा कुमार माथुर ने आगे इसकी शल्पगत वशेषताओं का उल्लेख करते हुए टिप्पणी की है क, "अनध्याय में 'मैं' ने सबके चरित्र का वश्लेषण कसी न कसी रूप में कया है, कंतु मा णक मुल्ला से उसका इतना मोह है क कहीं भी उनका

संतु लत वश्लेषण उसने नहीं होने दिया है।अर्थात कहानी रचने वाला 'मैं' नामक जो श्रोता है, वह उपन्यास के भीतर दावा तो यह करता है क मैं मा णक कथा को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर रहा हूँ और टेकनीक समेत बाकी सभी वस्तुओं के लए उसने मा णक मुल्ला को ही जिम्मेदार ठहराया है, ले कन वह तटस्थ नहीं रह सका। इस उपन्यास की संरचना में जैसे मा णक के बारे में प्रकाश का मत था क, 'हो न हो मा णक मुल्ला में भी हिंदी के अन्य कहानीकारों की तरह नारी के प्रति कुछ ऑब्सेशन है।" कुछ ऐसा ही ऑब्सेशन 'मैं' का मा णक के प्रति है। वह मा णक के व शष्ट व्यक्तिव से अ भभूत है और संकल्पबद्ध होकर उनकी कहानियों को बचाने का उद्यम करता है । इस अनन्य श्रोता 'मैं' ने निश्चित ही इन कहानियों को महत्वपूर्ण माना है, इसी लए मा णक मुल्ला के लापता होने पर उन्हें बचाने की दिशा में कलमबद्ध कया है। इस लये 'मैं' को मा णक मुल्ला की कहानियों का तटस्थ प्रस्तोता नहीं माना जा सकता, वरन् 'मैं' और मा णक एक नहीं तो अ धकांशतः एक जैसे व्यक्ति हैं। इसी लए माथुर तीसरे वृत्त को गौण मानते हैं।

खैर, इस उपन्यास के मुख्य सरोकार मा णक की कहानियों के इर्द- गर्द ही वक सत होते हैं। वे देखने में सी मत लग सकते हैं ले कन इससे कौन इंकार करेगा क हमारी जिंदगी की अ धकतर ऊर्जा इन्हीं छोटी-मोटी समस्याओं को सुलझाने में निकल जाती है और मध्यवर्गी जनसमूह इन्हीं उपलब्धियों के द्वारा स्वयं को सार्थक महसूस कर पाता है। इस लए 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' लघुता में महत् के तलाश की उल्लेखनीय कृति बन जाती है, और मध्यवर्ग की अदम्य आकांक्षा को प्रतिबिंबित करती है।उपन्यास में लौ कक मूल्यों की स क्रयता होती है। यथार्थवादी नजरिए के बिना उपन्यास की रचना संभव नहीं। उपन्यास को हम जीवन का कलात्मक वकल्प मान सकते हैं। एक उपन्यासकार घटनाओं, चरित्रों, परिस्थितियों, संवाद आदि के माध्यम से एक दुनिया अपने उपन्यास में बसाता है। ये चरित्र वास्त वक न होते हुए भी वास्त वकता का एहसास रचते हैं तथा 'जीवन और समाज की जटिलताओं से जूझने का प्रमाण' उपस्थित करते हैं। उपन्यासकार जिन व भन्न तत्वों से अपनी औपन्या सक दुनिया बनाता है, उनमें कथानक, कथोपकथन, देशकाल, शैली, और उद्देश्य महत्वपूर्ण होते हैं। नित्यानंद तिवारी का मानना है क, 'हर उपन्यासकार अपनी दृष्टि से जीवन की समस्याओं को चीरकर उनके भीतर से इन तत्वों का संगठन करता है। ये तत्व यांत्रिक फार्मूले नहीं । इनकी भू मका नियामक नहीं, निर्देशक है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में इन तत्वों की उपस्थिति एक संतु लत अनुपात में आती है, ले कन निजता पूरे कथा- वन्यास में अ धक स क्रय रहती है।'

1.1.3 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की चरित्र सृष्टि

मा णक, जमुना, तन्ना, लली, सत्ती, महेसर, रामधन और चमन ठाकुर अपनी छोटी-छोटी हसरतों के साथ कहानी मे उपस्थित होते हैं। उनकी चाहत और सपने भी बहूत मामूली हैं। एक तरह से देखें तो कोई भी पात्र नैतिक-अनैतिक की श्रेणी में वभाजित नहीं है। स्याह-सफेद का बँटवारा साफ-साफ नहीं है। प्रेमचंद की परवर्ती रचनाओं (कफन,गोदान) की भाँति 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में अच्छे व बुरे का मूल्यांकन संभव नहीं है। उनका तनाव ही इस रचना को मौ लक बनाता है। मा णक, तन्ना, जमुना, लली और सत्ती- घीसू और माधव के अ धक करीबी लगते हैं। सामाजिक मूल्यों के बरक्स हाथ आए अवसर को अपनी इच्छापूर्ति के लए इस्तेमाल कर लेना ही इनकी सबसे बड़ी सार्थकता है। जैसे वे सामाजिक मूल्यों को बचाने का कोई उद्यम नहीं करते, वैसे ही सामाजिक रूढ़ियों से टकराने का कोई इरादा इनमे नहीं दीखता। प्रतिरोध का अभाव इन चरित्रों का स्वभाव बन गया है। सत्तीं का प्रतिरोध भी निहायत निजी, वैयक्तिक और गैर-प्रभावी सद्ध होता है। यदि 'त्यागपत्र' (जैनेन्द्र कुमार) के प्रमोद अपने पद से इस्तीफा देकर हरिद्वार का रुख करते हैं, तो मा णक सत्ती को भखारियों के बीच देखकर गायब हो जाते हैं। स्वा भमानिनी सत्ती एक श्रमशील और आ र्थक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में उपन्यास में जरूर मौजूद है, ले कन शोषण और छल उसे भक्षावृत्ति करने को ववश कर देते हैं। उपन्यास में न तो कोई वराट संघर्ष है और न कोई वराट स्वप्न, फर भी छोटी-छोटी स्थितियाँ मनुष्य की शक्ति को सोख लेती हैं। प्रेमचंद के मामूली चरित्र (सूरदास -रंगभू म) बड़ी सत्ताओं से टकराकर 'संघर्ष और शहादत का सुख' पा सकते हैं ले कन भारती के चरित्र आम

घटनाओं के बीच ही पसकर रह जाते हैं। उनकी कोई पहचान नहीं बन पाती। व्यक्तित्व का वगलन आजादी के बाद भारतीय मध्यवर्ग की सबसे बड़ी वेदना बन जाती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' वग लत और खण्डित व्यक्तित्वों की मा र्मक एवं करुण कथा है।

जमुना का चारित्रिक गठन एक भावुक लड़की के रूप में आरंभ होता है। परन्तु, धीरे-धीरे वह व्यावहारिक बनती है और आ र्थक जागरूकता की ओर आगे बढ़ती है। तन्ना के प्रति अपनी तमाम आसक्तियों के बावजूद उसका वर्तमान जीवन, आ र्थक समृ द्ध और रामधन के साथ उसका साहचर्य उसे एक प्रौढ़ मान सकता की स्त्री सद्ध करते हैं। बदलती परिस्थितियों के साथ वह खुद को बदलती जाती है और सुर क्षत रहती है। मध्यवर्गीय व्यक्ति के लए यह एक स्ट्रेटजी है-जिंदा रहने, सुखी होने के लए। जमुना इसी रणनीति से काम करती है ।भावना एवं व्यवहारिकता का द्वंद्व उसमें समानांतर रूप से चलता है। इसे केवल अवसरवाद कहकर नहीं टाला जा सकता, जैसा क गरिजाकुमार माथुर कहते हैं- "जमुना अवसरवादी और समझौता-पसंद स्त्री है। उसके सामने न तो जीवन का कोई आदर्श है और न उसकी अपनी कोई इच्छा । वह प्रत्येक परिस्थिति से समझौता ही नहीं करती वरन् वह उसका उपयोग करती है।..... जमुना का समस्त जीवन वासना से ओतप्रोत और अर्थप्रधान है। दरअसल इसमें जमुना का दोष न होकर उस समाज-व्यवस्था की गहरी भू मका है, जो पतृसत्तात्मक है। जहाँ पुरुष पूरे परिवार के फैसले लेता है और बच्चे तथा स्त्रियाँ उसका उपनिवेश बनकर रह जाती हैं। तन्ना और जमुना के प्रेम की वैवाहिक परिणति न होने में इसी पतृसत्तामूलक समाज-व्यवस्था की जकड़बंदी देखी जा सकती है। जमुना इन्हीं परिस्थितियों में खुद को बनाती-बिगाड़ती अपने अस्तित्व की रक्षा करती चलती है। वह कोई नायिका नहीं है, जिसने आदर्श मार्ग पर चलने का व्रत लया हो। वह एक आम स्त्री है-अपनी कमजोरियों को सार्वजनिक करते हूए, अपनी राह बनाते हूए। जमुना और लली की तुलना करते हूए, एक बार फर गरिजाकुमार माथुर लखते हैं, "लली भी जमुना का प्रतिरूप नहीं तो उसी वर्ग की है-उसमें भी संघर्ष करने की क्षमता नहीं है, केवल परिस्थितियों से भाग जाने की क्षमता है। अंतर केवल इतना है क जमुना परिस्थितियों को ओढ़ लेती है..... लली परिस्थितियों से भागती है और उन्हें भुला देने की को शश करती है। लली के जीवन प्रसंग से ही एक सूत्रवाक्य मा णक को मला था, जिसे उन्होंने एक फोटो के कैप्शन के रुप में सुर क्षत कर लया था। वह था-खाओ,बदन बनाओ। भावुक लली की जिंदगी से ऐसा निष्कर्ष निकालना मर्दवादी दृष्टिकोण को ही उभारता है। मा णक मुल्ला उन प्रसंगो को ज्यादा दिलचस्पी से बयां करते हैं, जो रोमांटिक और समर्पणमूलक हैं। स्त्री की संघर्षशीलता, और समग्र स्थिति के चत्रण में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। मा णक एक क वता के हवाले से लली को लालसा भरी निगाहें, उनींदे आसुओं से आच्छादित जैसे पानी की बौछार में धुंधली दीखने वाली नीली झील की संज्ञा दी है। इसमें उनकी पसंद भी छिपी है। लली के व्यक्तिव को उन्होंने क वता की तरह गढ़ा है। लली से संवाद करते हूए वे खुद भी क व हो जाते हैं- मैं चाहता हूँ मेरी लली उतनी ही प वत्र, उतनी ही सूक्ष्म, उतनी ही दृढ़ बने जितनी देवसेना। मा णक प वत्रता, सूक्ष्मता, दृढ़ता आदि की अपेक्षा तो लली से करते हैं ले कन उनमें ये गुण मौजूद नहीं हैं। मा णक एक मौकापरस्त व्यक्ति के रूप में प्रकट होते हैं। जमुना और लली, जो उनके प्रति आक र्षत हैं, उससे मा णक को कोई क्षति नहीं पहुँचती। सत्ती के साथ उनके संबंध की असल परीक्षा होती है, जिसमें वे खरे नहीं उतरते।

सत्ती स्वा भमानिनी है और जमुना तथा लली की तरह स्वप्नजीवी न होकर दुनिया की यथार्थ समझ रखती है। चमन ठाकुर और महेसर दलाल दोनों की नीयत की बेहतर री डंग वह कर सकती है। इसी के चलते काले बेंट का चाकू भी वह अपने पास रखती है। उसके बारे में कहा गया है क, "वह कुछ ऐसी भावना जगाती थी, जो ऐसी ही कोई सं गनी जगा सकती थी, जो स्वाधीन हो, साहसी हो, जो मध्यवर्ग की मर्यादाओं के शीशों के पीछे सजी गु ड़या की तरह बेजान और खोखली न हो। जो सृजन और श्रम में, सामाजिक जीवन में उ चत भाग लेती हो, अपना उ चत देय देती हो, ऐसा लगता है क मा णक की पूरी कथा में सत्ती एक संभावनाशील स्त्री के रूप में उपस्थित होती है। उसमें समाज के शोषण से लड़ने की क्षमता मौजूद है ले कन अ धक समय तक उसकी यह ताकत टिक नहीं पाती। "सत्ती मा णक के पाँव पर गर पड़ी और बोली, "कसी तरह चमन ठाकुर से छूट कर आयी हूँ। अब डूब मरूँगी पर

वहाँ नहीं लौटूंगी। तुम कहीं ले चलो। मैं काम करूगी। मजदूरी कर लूँगी। तुम्हारे भरोसे चली आयी हूँ। मा णक का यह हाल क ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे। क वता-उ वता तो ठीक है पर यह इल्लत मा णक कहाँ पालते। मा णक का चारित्रिक गठन, उनकी भीरुता, भावुकता, जो खम न उठाने की फतरत, सामाजिक रूढियों का स्वीकार और निजी संबंधों के प्रति गैर ईमानदारी इस प्रसंग से उद्घाटित हो जाते हैं। मा णक पहली बार वास्त वक समस्याओं से रूबरू होते हैं और निर्णय के इस क्षण में वे पूरी तरह वफल हो जाते हैं। जमुना और लली ने अपने संबंधों के चलते मा णक के लए कोई समस्या नहीं पैदा की थी, इस लए वे संबंध निभते रहे ले कन जब सत्ती अपनी ठोस व वास्त वक समस्या के साथ उपस्थित होती है तो मा णक हडबड़ा जाते हैं। उन्हें शीशे के पीछे सजी हूई गु ड़या की तरह बेजान और खोखली सं गनी भी नहीं चाहिए और सत्ती की तरह स्वाधीन और साहसी भी नहीं। मा णक का यह दु चत्तापन उनके व्यक्तित्व की केंद्रीय वशेषता है। वे एक ठेठ मध्यवर्गीय व्यक्ति हैं, जो अपनी क मयों को ढँकने के लए अपने सद्धांत गढ़ लेता है और जब कुछ और संभव नहीं होता तो एक कलात्मक वकल्प वक सत करता है, कथाकार हो जाता है और अपनी वफलताओं को उसमें घुला देता है।

देवेन्द्र इस्सर कहते हैं क, 'मुझे जो बात परेशान करती रही है, वह मा णक की पूर्व निश्चित त्रासदी है। क्या स्वप्नों की निष्फलता और जीवन की निरर्थकता से कोई निजात मुम कन नहीं। क्या ऐसी अंतहीन अंधेरी सुरंग में दा खल हो चुका है क उस पार रोशनियों का कोई शहर नहीं। आत्महत्या, आत्मसमर्पण, वद्रोह, पलायन-मनुष्य क्या करे। इस उपन्यास में तथाक थत निष्कर्षो से ज्यादा जो मूल्यगत दु वधा है, वही इसकी शक्ति है।'

आजादी के बाद भारतीय मध्यवर्ग जिन परिस्थितियों से गुजर रहा था, जिन चंताओ, दु वधाओं, सरोकारों ने उसे घेरा हुआ था, उसे सूरज का सातवाँ घोड़ा में देखा तो जा सकता है, पर उस घेरे को तोड़ने का उपक्रम उसमें मौजूद नहीं है। अनेक आलोचक वद्वानों ने जमुना लली और सत्ती के बच्चों को सूरज के सातवें घोड़े से जोड़कर यह प्रतिपादित कया है क वर्तमान भले ही ठीक न हो , भ वष्य में बेहतरी की संभावना अवश्य की जा सकती है। भले ही सूरज के छः घोड़े छिन्न-भन्न हो गए हों, भले जमुना, लली, सत्ती, तन्ना, मा णक का जीवन अपूर्ण-अधूरा रह गया हो परंतु इनके बच्चों से, सूरज के सातवें घोड़े से अभी भी अपेक्षा की जा सकती है। हमें ध्यान रखना चाहिए क ये वे बच्चे हैं, जिन्हें 'अवैध' माना जा सकता है। वे कस प्रकार भ वष्य को सँवारेंगे यह एक जटिल प्रश्न है? क्या देश और समाज की वरासत भी अवैध हाथों में पहुँच चुकी है। आजादी के आंदोलन का स्वप्न और संघर्ष एक बार फर छलावा सद्ध हूए हैं। 'सूरज का सातवाँ' घोड़ा इसी आत्मद्वंद्व को मामूली घटनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है।

1.1.6 रचना-प्र क्रया तथा परिवेश

आधुनिक भावबोध एवं व्यवस्था का निर्माण संस्थानों द्वारा हुआ है। इन संस्थानों- संगठनों ने मनुष्य की नियति को नए तरीके से परिभा षत कया है। व्यवस्था से जब व्यक्ति टकराते हैं तो उनकी पराजय निश्चित होती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' समाज-व्यवस्था के समानांतर व्यक्तियों की टकराहट और उनकी वफलता को रेखां कत करता है। व्यक्ति जब संगठित नहीं हो पाता या वह संगठन में सम्मि लत होने से घबराता है क कहीं उसकी स्वतंत्रता खतरे में न पड़ जाय, तो उसकी संघर्षशीलता भी सी मत हो जाती है। ववाह संस्था की प वत्रता और नैतिकता इस उपन्यास में सीधे तौर पर प्रश्नां कत होती है। इसके केन्द्र में प्रेम की वैवाहिक परिणति न हो पाना भी है। तन्ना और जमुना, लली ओर मा णक तथा सत्ती और मा णक के रिश्तों को बीच में ही टूटना पड़ता है। इनके पीछे इन युग्मों की आ र्थक परनिर्भरता तो है ही, सामाजिक मूल्य और व्यवस्था भी महत्त्वपूर्ण भू मका अदा करते हैं।

महेसर दलाल अपनी आ र्थक मजबूती के चलते सामाजिक व्यवस्था को माखौल में बदल देता है। तन्ना की वधवा सास के संपर्क में आने पर अपनी अवैध पत्नी उर्फ तन्ना एवं उसकी बहनों की तथाक थत बुआ के प्रति उदासीन हो

जाता है। जब यह बुआ अपना हक़ जताने लगती है, महेसर एक पल में उसे घर से निकाल देता है। आ र्थक स्थितियों ने समाज-व्यवस्था को अपने मातहत कर लया है। महेसर की सत्ती के प्रति आसक्ति और चमन ठाकुर को धन का लालच देना अर्थतंत्र के वर्चस्व को ही दर्शाता है। उपन्यास का अंत भी अत्यंत मा र्मक है, जब सत्ती भक्षावृत्ति करती दिखायी देती है। मा णक इसी घटना के बाद लापता हो जाते हैं। मा णक, जो अभी तक तटस्थ और निरपेक्ष ढंग से ऑबजेक्टिव होकर कहानियाँ सुना रहे थे-सत्ती की भीख माँगने की घटना से निहायत सब्जेक्टिव ढंग से जुड़ जाते हैं और वैयक्तिक आघात से गुजरते हैं। निजी आकांक्षा और समाज-व्यवस्था अर्थतंत्र के नीचे दब जाती है। भारती लखते हैं- पछले तीन-चार वर्षों में मार्क्सवाद के अध्ययन से मुझे जितनी शांति, जितना बल और जितनी आशा मली है, हिंदी की मार्क्सवादी समीक्षा और चंतन से उतनी निराशा और असंतोष। .....इसके बावजूद मेरी आस्था कभी भी मार्क्सवाद में कम नहीं हुई। और न मैने अपनी जनता के दुख-दर्द से मुँह फेरा है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की संवेदना अपने ऊपरी कलेवर में निजी, आत्मगत और रोमानी लगती है ले कन अपनी भीतरी संरचना में वह आ र्थक परिस्थितियों की बुनावट करती है। भारती का कथन इस लघु उपन्यास की रचना-प्र क्रया का सहज उद्घाटन करता है। मार्क्सवाद की यांत्रिकता का वरोध भारती व्यंग्य द्वारा करते हैं। इसके पीछे उनकी साफ समझ दिखाई देती है। वे कसी भी दर्शन के सृजनात्मक उपयोग पर बल देते हैं। यही सृजनात्मकता दर्शन को संवेदना के स्तर पर गठित करती है। भारती की चंता यह है क मार्क्सवाद को साहित्य आलोचकों और चंतकों ने बड़े ही गैर रचनात्मक तरीके से उपस्थित कया है। सूरज का सातवाँ घोड़ा संभवत: इसी चुनौती की उपज है। इस लए आ र्थक प्रश्न इसमें गौण नही हुए है।

उपन्यास-लेखन, मध्यवर्ग से आए लागों द्वारा ही संभव होता रहा है। उपन्यासों के पाठक भी इसी वर्ग से आते हैं। समाज का सबसे गतिशील वर्ग भी यही माना जाता है, यह वर्ग लौ कक मूल्यों का आग्रही होता है। अपनी निराशा और वफलता को छिपाने का अनूठा मनो वज्ञान इसके पास होता है। अवसरों की निरंतर तलाश और उनके अनुसार खुद को अनुकू लत करने का रंग-ढंग भी उसे बखूबी आता है। मा णक मुल्ला इस वर्ग के सच्चे प्रतिनि ध दिखाई देते हैं। अन्य चरित्रों में भी इस मान सकता को देखा जा सकता है। "मध्यवर्गीय वास्त वकता के अनेक आयाम इसमें चरित्रों की परिणति के कारण बने हैं। आ र्थक तंगी, नैतिकता, अवैज्ञानिक परंपराएँ, जातिगत अहं और समाज भय, हीनभावना और कायरता, रोमांटिक भाव, पारिवारिक कर्तव्य, भावनाएँ, खोखले आदर्श,स्थितिशील आचरण, धर्म और गति के प्रति शंका एवं भय, स्वप्नमय अवस्था में जीने की बाध्यता - ये सारे पहलू कहानियों के घटनाप्रवाह को जन्म, गति और आकार देते हैं।"[1]चूँ क, मा णक मुल्ला इन कहानियों से वास्त वक रूप से जुड़े रहे हैं, इस लए वे अपने नजरिए का सम्मिश्रण इसमें करते हुए ही इसे पेश करते हैं। माना जा सकता क वे एक तटस्थ अनुभव की प्रस्तुति इसमें कर रहे हैं। वे घटनाएँ, जो उनके जीवन से अ भन्न रूप से जुड़ी रहीं हैं, वे समय बीतने के साथ अपनी आवेगमयता त्याग कर कथा का रूप धारण कर लेती हैं। कथा कहना और सुनना दोनों ही जैसे एक नयी संभावना रचता है। अपने तनावों कुंठाओं से मुक्ति की राह बनाता है। एक दिन कथा शुरू होने से पहले प्रकाश ने कहा क- "भाई जी उमस हम सब की जिंदगी में छायी हुई है ।... हम सब निम्न मध्य श्रेणी के लोगों की जिंदगी में हवा का एक ताजा झोंका नहीं।... कसी-न-कसी तरह ताजी हवा के झोंके चलने चाहिए । चाहे लू के ही झोंके क्यों न हों। एक ताजी हवा की चाहत उन्हें कहानियों से जोड़ती है। कहानियाँ सुनना-सुनाना बदलाव की प्र क्रया में शरकत करने जैसा हो जाता है। एक स्वप्न-निर्माण की प्र क्रया भी। ले कन, एक दिन कथावाचक मा णक मुल्ला सत्ती को अपने बच्चे और चमन ठाकुर के साथ भीख माँगते देखकर वच लत हो जाते हैं और फर गायब। यह पलायन का एक नया रूप है। भारती अपने इस उपन्यास में आशा और संभावना की एक धुंधली तस्वीर तो पेश करते हैं ले कन वह ठोस रूप ग्रहण नहीं कर पाती ।

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की रचनात्मक पृष्ठभू म की चर्चा करते हुए कहा गया है क- दोनों वश्वयुद्धों की सुलगन अभी वातावरण में बसी हुई थी। साम्राज्यवाद अपना वस्तर गोल कर रहा था और साम्यवाद अपने सबसे कट्टर शत्रु पूँजीवाद के सामने सीना तान कर खड़ा हो चुका था, भारती ने इसी समय यह पहचान भी की क

वचारधाराएँ प्रमुख और मनुष्य गौण होता जा रहा है। उन्होंने निजता को प्रमुखता देते हुए वैचारिक यांत्रिकता को तोड़ा। सामाजिक वसंगतियों को उजागर करते हुए बड़े हल्के कस्म के निष्कर्ष निकालना केवल व्यंग्य- वनोद के लए नहीं है। वह अ धक गहरा और मा र्मक है। आजादी के बाद जनकल्याण का जो स्वांग रचा गया, उसकी योजनाओं की फेहरिस्त के भीतर वस्था पत होते मनुष्य और टूटती आकांक्षा को ही 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' संबो धत करता है।

1.1.7 शल्प, भाषा तथा सामाजिक उद्देश्य

उपन्यास का शल्प उसके कथ्य से अलग नहीं कया जा सकता। संवेदना अपने को व्यक्त करने के लए जो रूप ग्रहण करती है, उसे शल्प कहा जाता है। उपन्यास में शल्प भाषा के द्वारा गढ़ा जाता है। उपन्यास के व भन्न घटकों की आंतरिक संगति से उसका शल्प आकार पाता है। "सूरज का सातवाँ घोड़ा' में लेखक कहानी की वलक्षण तकनीक का उपयोग करते हुए कहानी के परंपरागत ढाँचे या तकनीक का मखौल उड़ाता है। ....इसका कारण यह है क कलाकार मानता है क उसके पास जीवनानुभव को देखने की मौ लक दृष्टि हो और संप्रेषण के उत्पादनों पर अच्छी पकड़ हो, तो तकनीकी उपादान(नए हो या पुराने), शैली वषयक संकेत, शल्प वषयक स्वीकृत अवधारणाएँ ओर समीक्षात्मक संकल्पनाएँ - ये सब कलंदर कलाकार के सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं"। कहने का अर्थ यह क मौ लक संवेदना अपने शल्प का आ वष्कार खुद-ब-खुद कर लेती है। इसे एक सामान्य कस्म के उदाहरण से भी समझा जा सकता है। जब हम क्रोध, भय, प्रेम आदि भावदशाओं से गुजरते हैं तो हमारी भाषा, वाक्य-संरचना और शैली भन्न- भन्न रूप धारण कर प्रकट होती है। इसी प्रकार रचनाकार जब कसी वषय-वस्तु को उभारना चाहता है तो उसका शल्प स्वत: भी वक सत होता चलता है ले कन रचनाकार के लए शल्प साधना एक निरंतर चलने वाली प्र क्रया है। शल्प गठन एक सचेत उद्यम भी है। उपरोक्त वश्लेषण यह स्पष्ट करता है क कथ्य और शल्प एक दूसरे से जुदा न होकर एक दूसरे के पूरक और सहयात्री हैं। इसे 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में भी साफ तौर पर देखा जा सकता है।

इस उपन्यास की शल्पगत चुनौतियों की ओर संकेत करते हुए भारती ने स्वयं लखा है-" कथा शैली भी कुछ अनोखे ढंग की है, जो है तो वास्तव में पुरानी ही, पर इतनी पुरानी क आज के पाठक को थोड़ी नयी या अपरि चत सी लग सकती है। बहुत छोटे से चौखटे में काफी लंबा घटनाक्रम काफी वस्तृत क्षेत्र का चत्रण करने की ववशता के कारण यह ढंग अपनाना पड़ा"। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लए सबसे पहले मा णक के बारे में सूचनाएँ-उपोद्घात- में दी जाती हैं। इससे दो बातें साफ हो जाती हैं, एक तो यह क मा णक मुल्ला की जिंदगी, वचार, आचरण आदि कैसा था और दूसरा यह क वे कन मनुष्यों, परिस्थितियों और सामाजिक आ र्थक व्यवस्था से घिरे थे।

इसका उद्घाटन करते हुए हमें 'मैं' और मा णक मुल्ला की भाषा-शैली और अ भव्यक्ति कौशल का पता चलता है। व्यंग्य उनके व्यक्तित्व की केन्द्रीय वशेषता है। यह व्यंग्य साहित्य की रचना-प्र क्रया, कथा टेकनीक, प्रेम और राजनीति जैसे वषय और मार्क्सवादी वचारधारा तथा शल्प- वधान को लेकर जो यांत्रिक समझ बना ली गई है, उसे तोड़ता है। हिंदी कहानी परंपरा पर टिप्पणी के रूप में ये वाक्यांश- ' क हिंदी में बहुत-से कहानीकार इसी लए प्र सद्ध हो गए हैं क उनकी कहानी में कथानक चाहे लंगड़ाता हो, पात्र चाहे पल पले हों, ले कन सामाजिक तथा राजनीतिक निष्कर्ष अद्भुत होते हैं और 'मा णक मुल्ला का चमत्कार यह था क जैसे बाजीगर मुँह से आम निकाल देता है वैसे ही वे इन कहानियों से सामाजिक कल्याण के निष्कर्ष निकाल देने में समर्थ थे'- एक महत्वपूर्ण संकेत करते हैं। यहाँ कथा-साहित्य लेखन और उसकी समीक्षा पद्धति पर करारा व्यंग्य है। ले कन, इसे आत्म-व्यंग्य की शैली में प्रस्तुत

कया गया है। मा णक स्वयं उसी कथा-परंपरा के प्रतिनि ध हैं, इस लए अपने ऊपर व्यंग्य कराकर वे संभतवत: नए शल्प की माँग करते हैं और उसका 'मॉडल', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में पेश करवाते हैं।

जिन मध्यवर्गीय चरित्रों की जीवन-गाथा इस उपन्यास में बुनी गई है, उसे व्यक्त करने के लए जरूरी था क भाषा भी उसी वर्ग की हो। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की भाषा एक अनौपचारिकता लए हूए है। यह अनौपचारिक भाषा उपन्यास के भीतर मौजूद मनुष्यों के बीच आपसी संबंधों को प्रामा णक बनाती है। परिवार, पड़ोस और परि चत-समूह के बीच ही सारी घटनाएँ घटती हैं। ये सब अनौपचारिक संस्थान ही हैं। घटनाओं के घटने ही नहीं वरन् घटनाओं के आख्यान का माहौल भी अनौपचारिक ही है। मा णक मुल्ला अपने मत्रवत् शा र्गदों के बीच कहानियाँ सुनाते हैं। वैसे भी प्रेमकथाओं के वक्ता-श्रोता औपचारिकता को तोड़कर ही साधारणीकृत हो सकते हैं। कहना न होगा क अपनी वषयवस्तु और घटना परिवेश के चलते 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में प्रयुक्त भाषा आम मध्यवर्ग की निकटतम भाषा है, जो एक खास रवानगी और जबानों के सम्मिश्रण से नि र्मत होती है। धर्मवीर भारती भाषा से अ भप्राय को छिपाने और प्रकट करने में सद्धहस्त हैं। वे तत्सम और तद्भव शब्दों को अगल-बगल रखकर उनकी टकराहट से अर्थ उत्पन्न करते हैं। एक उद्धरण लेते हैं-'डाक ले जाते हूँए एक बार रेल में नीमसार जाती हुई तीर्थयात्रिणी जमुना मली। साथ में रामधन था। जमुना बड़ी ममता से पास आकर बैठ गई उसके बच्चे ने मामा को प्रणाम कया। जमुना ने दोनों को रवाना दिया। कौर तोड़ते हुए तन्ना की आँख में आँसू आ गए। जमुना ने कहा भी क कोठी है, ताँगा है, खुली आबोहवा है, आकर कुछ दिन रहो, तन्दुरूस्ती संभल जाएगी, पर बेचारे तन्ना नैतिकता और ईमानदारी बड़ी चीज होती है'। यदि इस अनुच्छेद का वश्लेषण करें तो हम पाते हैं क 'नीमसार' (ने मशारण्य का देशज) और 'तीर्थयात्रिणी' जैसे शब्द जमुना के चारित्रिक-गठन को एक व्यंग्यात्मक आयाम प्रदान करते हैं। जमुना के लए ने मशारण्य की प वत्रता, अध्यात्मिकता का कोई औ चत्य नहीं है। इसी लए लेखक 'नीमसार' का प्रयोग करता है और फर तत्समनिष्ठ व्यंग्यपरक वशेषण 'तीर्थयात्रिणी' तो जैसे जमुना के पूरे मनोजगत को वस्फोट की तरह प्रकट कर देता है।'बच्चे ने 'मामा' को प्रणाम कया'। यहाँ 'मामा' शब्द समाज-व्यवस्था और स्त्री-पुरुष संबंधों के स्वांग को पूरे तनाव के साथ उभार देता है। इसी प्रकार अन्यत्र एक और रिश्तासूचक शब्द 'बुआ' का प्रयोग भी वडम्बनापूर्ण स्थितियों का उद्घाटक बन गया है। जमुना के द्वारा तन्ना को दिया गया निमंत्रण कोठी, ताँगा, खुली आबोहवा और तंदुरूस्ती संभलने का लालच देना-भी एक मा र्मक प्रसंग का निर्माण करते हैं। जमुना और तन्ना के रिश्ते इस प्रकरण के माध्यम से नए रूप में प्रकट होते हैं और पारंपरिक समाजशास्त्र इनको परिभा षत करने में अक्षम सद्ध होता है। उसके शब्द जैसे चुक जाते हैं। इसी प्रकार तन्ना के लए प्रयुक्त वाक्यांश- 'नैतिकता और ईमानदारी बड़ी चीज है' भी मूल्यों की टकराहट और आत्मसंघर्ष को द्योतित करता है। साथ ही नैतिकता और ईमानदारी के लए 'चीज' का प्रयोग वह भी वशेषण 'बड़ी' के साथ, इन मूल्यों के वघटन और निस्सारता को मा र्मक अ भव्यक्ति प्रदान करता है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की भाषा-संरचना और शैली, वराट फलक को इसी वश्वास से घनीभूत करते हूए, उसका संक्षेपण करने में समर्थ हो पाती है।

भारती ने इस उपन्यास में जो एक और प्रयोग कया है, वह है छोटे-छोटे वाक्यों की संरचना। इससे लाभ यह हुआ क कस्सा कहने में एक प्रवाह बना। कहने की शैली मुक्कमल बन गई। दृश्य उभरते चले गए। संवाद सहज संप्रेष्य हो गए। "अगले दिन मैं गया और मा णक मुल्ला से बताया क मैंने यह सपना देखा है तो वे झल्ला गए, देखा है तो मैं क्या करूँ। जब देखो तब सपना देखा है, सपना देखा है। अरे कौन शेर-चीता देखा है क गाते फरते हो।" जब मैं चुप हो गया तो मा णक मुल्ला मेरे पास आए और सांत्वना भरे शब्दों में बोले, 'ऐसे सपने तुम अक्सर

देखते हो'। मैने कहा-हाँ, तो बोले, इसका मतलब है क प्रकृति ने तुम्हें वशेष कार्य के लए चुना है. वार्तालाप शैली का यह अनूठा उदाहरण है। अंतिम वाक्य एक सूत्र की भांति प्रकट होता है और बु द्धजी वयों के एक चर परि चत अनुभव को दर्शाता है। भारती ने इसी प्रकार व्यंग्य से वरोधी अर्थ प्रकट करने का प्रयास इस उपन्यास में कया है। भाषा, शैली, संवाद और बिंब मूलकता इस उपन्यास में कथ्य की अ भव्यक्ति का समर्थ साधन बने हैं। अपने उद्देश्य को रेखां कत करने के लए धर्मवीर भारती इनकी सजग और आनुपातिक बुनावट करते हैं, अपने पाठकों का अ भवादन स्वीकार करते हुए भारती ने निवेदन में लखा है क, 'जो कुछ लखता हूँ, उसमें सामाजिक उद्देश्य अवश्य है। पर वह स्वान्तः सुखाय भी है। यह अवश्य है क मेरे स्व में आप सभी सम्मि लत हैं, आप सभी का सुख-दुःख, वेदना-उल्लास मेरा अपना है। वास्तव में वह कोई बहुत बड़ी कहानी है, जो हम सबों के माध्यम से व्यक्त हो रही है। इस स्व का वस्तार करते हूए, वे आगे बताते है क 'देखो ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम नहीं वरन उस जिंदगी का चत्रण करती हैं, जिसे आज का निम्न मध्यवर्ग जी रहा है। उसमें प्रेम से कहीं ज्यादा हो गया है, आज का आ र्थक संघर्ष, नैतिक वश्रृंखलता, इसी लए इतना अनाचार, निराशा, कटुता, और अंधेरा मध्यवर्ग पर छा गया है।" 'स्व' से 'पर' की यात्रा-आत्मानुभव से सामाजिक समस्याओं के बोध तक पहुँचना ही इस उपन्यास का केंद्रीय उद्देश्य माना जा सकता है। उपन्यास अपने कलेवर में भले ही कुछ व्यक्ति-चरित्रों की व्यथा-कथा जैसा प्रतीत होता हो, ले कन मध्यवर्ग का मोहभंग, उसकी आंदोलन वमुखता और निजता तथा रोजमर्रा की चुनौतियाँ ही इसके केंद्र में हैं। अपने व्यंग्य, ब्यौरे और व्यवस्था पर टिप्पणी के चलते यह उपन्यास हिंदी कथा साहित्य की मूल्यवान कृति बन जाता है।

ववेचन

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' आजादी के बाद भारत के मध्यवर्ग में व्याप्त निराशा और उसकी आत्मोन्मुखता का उद्घाटन करता है। कहानी कहने वाले मा णक मुल्ला और कथा श्रोता दोनों मूल कथा से जुड़ ही इस लए पाते हैं क उसमें उनके निजी अनुभव की बुनावट हुई है। इस निजता का उभयनिष्ठ पक्ष यह है क पूरा मध्यवर्ग उसमें समाहित हो जाता है। बड़े लक्ष्य के बजाय छोटे-छोटे सपने, मनमुटाव, झगड़े और उपलब्धियाँ ही इसको संतोष देने लगती हैं। इस उपन्यास में आशा और अंधकार एक तनाव के रूप में कथा-प्रवाह को ताने रखते हैं। अंधकार प्रगाढ़ होने के बाद टूट जाता है। निराशा के भीतर से अचानक उम्मीद की एक लौ भभक पड़ती है। अज्ञेय ने इसकी ओर संकेत करते हुए लखा है क, 'उसमें(सूरज का सातवाँ घोड़ा) दो चीजें हैं जो उसे इस खतरे से उबारती हैं- और इनमें से एक भी काफी होती है- एक तो उसका हास्य, भले ही वह वक्र और कभी कुटिल या वद्रूप भी हो, दूसरे एक अदम्य और निष्ठामयी आशा। वास्तव में जीवन के प्रति यह अ डग आस्था ही सूरज का सातवाँ घोड़ा है। भारती ने अपने पहले उपन्यास गुनाहों का देवता **(1949)** की तुलना में इस उपन्यास में भावनात्मक आवेग को संतु लत कया है। इस लए इसकी कस्सागोई दुख-दर्द को उभारते हुए उसमें शरीक करने का प्रयत्न नहीं करती वरन् उससे वच्छिन्न कर देती है। तटस्थता और भागीदारी की यह चुनौती इस उपन्यास का शल्प नि र्मत करती है। शल्प का सर्वथा अ भनव प्रयोग इसमें देखा जा सकता है। कथाकार, कथा का ही हिस्सा है। कथा लेखक एक सजग श्रोता और कथा के महत्व को समझने वाले एक कलमकार की भू मका में उपस्थित है। जैसा सुना, वैसा लखा। ले कन 'उपोद्घात' और 'अनध्यायों' में उसके कौशल को जान पाते हैं।"सूरज का सातवाँ घोड़ा' एक कहानी में अनेक कहानियाँ नहीं, अनेक कहानियों में एक कहानी है। इसी अर्थ में वह निजता से सामाजिकता का आख्यान बन गया है । मा णक, तन्ना, जमुना, लली, सती, महेसर, चमन ठाकुर केवल वैयक्तिक चरित्र न होकर मध्यवर्ग की व भन्न परिस्थितियों के प्रतिनि ध भी बन जाते हैं। ठीक ही कहा गया है क यह उपन्यास, 'पूरे समाज का चत्र और आलोचन है, और जैसे

उस समाज की अनंत शक्तियाँ परस्पर संबद्ध, परस्पर आ श्रत और परस्पर सम्भूत हैं, वैसे ही उसकी कहानियाँ भी।-'सूरज का सातवाँ घोड़ा' भारतीय सामाजिक संरचना, उसके ताने-बाने, संस्थाओं की टकराहट और व्यक्ति-स्वातंत्र्य को उदघाटित करने हेतु वृत्ताकार कथा-संरचना को धारण करता है। सामाजिक घटनाओं के प्रति निजी प्रति क्रया भन्न-भन्न रूपों में प्रकट होती है। देश और काल में भी इनकी व्याप्ति अलग तरह से हो सकती है। भारती ने कथा के कलेवर को प्रेम आधारित बनाकर इसके देश-काल के आयाम को फैला दिया है। वास्तव में यहाँ प्रेम एक मूल्य के रूप में यहाँ आया है और उसके वश्रृखंल होने का अर्थ मूल्यव्यवस्था के वखराव से है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' वघटित मूल्यों का साक्ष्य उपस्थित करता है। 'पर कोई न कोई चीज ऐसी है, जिसने हमेशा अंधकार को चीर कर आगे बढ़ने, समाज व्यवस्था को बदलने और मानवता के सहज मूल्यों को पुनः स्था पत करने की ताकत और प्रेरणा दी है। उपन्यास अपने समापन तक पहुँचते हुए भावी पीढ़ी के माध्यम से नए सपनों का सृजन करता है। मानवीय जिजी वषा को अंधकार में भटकने से भारती बचा लेते हैं। इस उपन्यास में भारती वैचारिक आग्रह के सवाल को भी उठाते हैं, जिसमें रचना-प्र क्रया के प्रश्नों को सहज ही ल क्षत कया जा सकता है। सृजनात्मकता, वैचारिकी की ऊर्जा तो ग्रहण कर सकती है परंतु उसका यांत्रिक इस्तेमाल नहीं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की रचना-प्र क्रया इसी उद्देश्य को आगे लेकर बढ़ती है। सामाजिक चंताओं का अनोखा ताना-बाना इसमें मौजूद है, पर कहीं भी वह अपने ठस्स रूप में नहीं प्रकट होता। भाषा के स्वतः-स्फूर्त प्रवाह, कथन-शैली और वाक्य-भं गमाओं से वह निखरता चलता है। कहानियाँ एक सूत्र में परो उठती हैं और सामाजिक सरोकार उनके भीतर से खुद-ब-खुद फूटने लगते हैं। कस्सा और कस्सागो एक हो जाते हैं। संप्रेषण और संदेश -सूरज के सातवें घोड़े पर बैठ सहयात्रा के लए प्रस्थान करते हैं।

निष्कर्ष

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' आजाद भारत के मध्यवर्गीय जीवन को उद्घाटित करने वाली एक समर्थ रचना है। वचार को सृजनात्मक रूप में प्रस्तुत करने की चुनौती के बीच इसका शल्प आकार पाता है। प्रायः यही कारण है क सभी आलोचकों ने इसके शल्प-कौशल की प्रशंसा की है। आजादी के पहले हिंदी उपन्यास ने मध्यवर्ग की मूल्यवत्ता और संघर्षध र्मता का ही चत्रण अ धक कया है। बाद में यह स्थिति बदलती है। शोषण और प्रवंचना का नया दौर शुरू होने पर हिंदी लेखक भी नए तेवर और सृजन के नए औजारों के साथ हमारे बीच उपस्थित होता है। धर्मवीर भारती ऐसे ही रचनाकार हैं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में उन्होंने निजी प्रसंगों का समाजीकरण कया है। व्यक्ति और व्यवस्था एक साथ यात्रा करते हुए, एक दूसरे की खा मयों का पर्दाफाश करते हैं। रचना और समाज, इस प्रकार, एक-दूसरे को आलो कत करते हैं।

अभ्यास के लए प्रश्न

1. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की मूल संवेदना पर प्रकाश डा लए।
2. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' मध्यवर्ग की संघर्ष-गाथा है'। ववेचन कीजिए।
3. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के शीर्षक की प्रासं गकता पर वचार कीजिए।
4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के चरित्र-वधान की चर्चा कीजिए।
5. मा णक मुल्ला की चारित्रिक वशेषताओं का उदघाटन कीजिए।
6. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के स्त्री-पात्रों का मनोवैज्ञानिक वश्लेषण कीजिए।
7. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' कई कहानियों की एक कहानी है।" इस कथन के आलोक में इसके कथानक का

ववेचन कीजिए।

8. शल्प वधान की दृष्टि से -'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का ववेचन कीजिए।
9. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की भाषा पर टिप्पणी ल खए।

10. हिंदी कथा साहित्य में -'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का स्थान निर्धारित कीजिए।
11. धर्मवीर भारती के रचनात्मक व्यक्तिव पर प्रकाश डालें।
12. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में व्यंग्य की प्रकृति का ववेचन कीजिए।

व्याख्या के लए अंश

1. हाँ, ले कन जो नैतिक वकृति से.....बैल की तरह चक्कर लगाते जाते हैं।(पृ0 48 से)
2. स्वर्ग का फाटक ।.....जैसी तन्ना को प्रथम बार मली थी। (पृ 57 से)
3. टेकनीक। हाँ, टेकनीक पर ज्यादा जोर.....मैं उसका लोहा मानता हूँ।(पृ0 75 से)
4. पर कोई न कोई ऐसी चीज है..... सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च(पृ0 100 से)

प्रयोग

1. रात में देखे एक सपने का मा णक मुल्ला की शैली में प्रस्तुति कीजिए।
2. अपने पास-पडोस में सत्ती जैसी कसी स्त्री के साहस और स्वा भमान की चर्चा करें।
3. सूरज के सात घोड़े क्या भौतिक शास्त्र में उल्लि खत ' प्रज्म' (prism) के सात रंगों से मेल खाते हैं। अपने अध्यापक से चर्चा कीजिए।
4. सात की संख्या के महत्त्व को व भन्न दृष्टांतों के द्वारा प्रतिपादित कीजिए।

संदर्भ सूची

1. अज्ञेय, भू मका(प्रथम संस्करण), सूरज का सातवाँ घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
2. चंद्रकांत वांदिवडेकर, धर्मवीर भारती: व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
3. पुष्पा भारती(सं0), धर्मवीर भारती की साहित्य साधना, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
4. प्रभाकर क्षोत्रिय(सं0), धर्मवीर भारती,मोहनलाल के डया हिंदी साहित्य न्यास, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण

फल्म : सूरज का सातवाँ घोड़ा, निर्देशक श्याम बेनेगल
वृत्त चत्र: धर्मवीर भारती, निर्देशक उदय प्रकाश, निर्माता-साहित्य अकादमी

पाठ में आये महत्वपूर्ण शब्द

1. इतिहासकारों की दृष्टि में भारत का आधुनिक काल 1707 ई0 में औरंगजेब के पतन के बाद और हिंदी आलोचकों के अनुसार 1850 (वश्वनाथ त्रिपाठी) या 1857 (प्रथम स्वाधीनता संग्राम) या 1868 में 'क व वचन सुधा' के प्रकाशन के साथ मानने का आग्रह रहा है। 1800 ई0 में फोर्ट वलयम कॉलेज की स्थापना के बाद हिंदी, भाषा और शक्षण के नए रूप ही नहीं नई संभावनाएँ लेकर भी आती है। अत: 1800 ई0 को आधुनिकता के उदय को मानना समीचीन होगा। यही मत डॉ0 नगेंद्र संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में भी व्यक्त कया गया है।

2. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 **101,** भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण
3. वामन शवराम आप्टे, संस्कृत-हिंदी कोश, पृ**0**
4. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवॉं घोड़ा, पृ**0** ,भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण
5. गरिजा कुमार माथुर, एक नवीन कथा-प्रयोग:सूरज का सातवॉं घोड़ा, धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,

पाठ में आये महत्वपूर्ण शब्द

6. ....वही.....पृ**0 211**
7. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**0 19** ,भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण
8. नित्यानंद तिवारी, साहित्य का स्वरूप, एन सी ई आर टी , पृ**0 67**
9. ..... वही.....पृ**0 67**
10. गरिजा कुमार माथुर, एक नवीन कथा-प्रयोग:सूरज का सातवाँ घोड़ा, धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,पुष्पा ा(सं**0)** भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, पृ**0 209-10**
11. .....वही.....पृ**0**
12. सूरज पृ**0 67**
13. सूरज पृ**0 79**
14. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**0 86**

15.देवेन्द्र इस्सर,धर्मवीर भारती की साहित्य साधना, पुष्पा भारती(सं**0)** भारतीय ज्ञानपीठ,प्रथमसंस्करण,पृ**0 220**

पाठ में आये महत्वपूर्ण शब्द

16. धर्मवीर भारती, निवेदन, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ **11-12**
17. चंद्रकांत वांदिवडेकर, धर्मवीर भारती: व्यक्तिव और कृतित्व , साहित्य अकादेमी, पृ**0 88**
18. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**0 47**
19. राजकुमारगौतम,धर्मवीरभारती, प्रभाकरक्षोत्रिय(सं**0),** मोहनसाहित्यन्यास,पृ**0139-140**
20. चंद्रकांत वांदिवडेकर, धर्मवीर भारती: व्यक्तिव और कृतित्व , साहित्य अकादेमी, पृ**0 90**
21. सूरज का सातवाँ घोड़ा,निवेदन, पृ**0 11**
22. सूरज का सातवाँ घोड़ा,ठपोदघात, पृ**0 18**
23. सूरज का सातवाँ घोड़ा,ठपोदघात, पृ**0 19**
24. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**0 98**
25. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**012**
26. .....वही.....पृ**0 100**

पाठ में आये महत्वपूर्ण शब्द

27. अज्ञेय, भू मका,सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**0 9**
28. अज्ञेय, भू मका,सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ**0 9**

29. .....वही.....

30. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 **93**

Web sites/Portals

www.geeta-kavita.com
www.hi.wikipedia.com
www.bbchindi.co.in
www.hindimedia.blogspot.com
www.kavitakosh.com